भूमिका

भारतवर्ष में अभी प्लेग का प्रकोप शान्त नहीं हुआ। इस वर्ष फिर प्लेग का जोर हुआ है। सर्व साधारण को इस विषय की जानकारी तथा इस से रक्षित होने के उपायों का ज्ञान होना अत्यावश्यकीय है। प्लेग के ऊपर कई छोटी मोटी पुस्तकें निकल गई हैं किन्तु उनमें शास्त्रीय विवेचन कम है। मैंने कई पुस्तकों, मासिकपत्रों का संग्रह कर उनका भाव ले तथा अपने शास्त्रीय अनुभव और विचार को मिला इस निबन्ध की रचना की है। इस में प्लेग सम्बन्धी अनेक बातों का तात्विक वर्णन किया गया है। हमारे कार्य्यालय से ऐसे निबन्धों का प्रकाशित होना प्रारम्भ हो गया है। पाठकों को उनसे लाभ उठाना चाहिये।

राधावल्लभ वैद्यराज,
विजयगढ़ जिला अलीगढ़।

श्रीधन्वन्तरि औषधालय का आयुर्वेदीय मासिक पत्र

आरोग्यसिन्धु

के प्रथमवर्ष के १२ अङ्कों की सुन्दर फायल बिकने को तैयार है। इसमें बड २ उत्तम सारगर्भित निम्न लिखित लेख ह।

(१) **वेदों में वैद्यकज्ञान** इस लेख में ऋक, यजु, अथर्व, वेदों के अनेक मन्त्र जिसमें आयुर्वेदीय विषयों का वर्णन है तथा जिससे आयुर्वेद की प्राचीनता सिद्ध होती है।

(२) **ज्वर और लंघन** इस लेख में ज्वर में लघन क्यों कराना चाहिये और कौन से ज्वर में लघन कराने चाहिये इसका सविस्तार वर्णन है।

(३) **मलेरिया और क्यूनाइन** इसमें मेलेरिया का सविस्तार वर्णन है और क्यूनाइन का खण्डन बडी योग्यता से किया है।

(४) **शरीर रचना** इसमें मस्तिष्क शक्ति सम्बन्धी अनेक चित्र दिये गये है और कौन से शक्ति कौन से स्थान में है उनका विवेचन डाक्टरी और वैद्यकीय मतानुसार किया है।

(५) **क्षय रोग** इस में क्षयरोग का बड़ी योग्यता पूर्वक विवेचन किया है।

(६) **रसायन औपधियों से आयु वृद्धि** इसमें रसायन औपधियों से आयुवृद्धि हो सकती है या नहीं और किस प्रकार हो सकती है इसका शास्त्रोक्त और अनेक युक्तियों द्वारा विवेचन किया है।

(७) **भूतविद्या** यह आयुर्वेद का एक अग क्यों माना है उसका सारगर्भित विवेचन है।

(८) **मोती ज्वर और उसकी चिकित्सा** इसमें मोती ज्वर के भेद लक्षण और अनुभूत चिकित्सा का वर्णन है।

(९) **शीत ज्वर (मेलेरिया) की चिकित्सा** इसमें अनेक प्रयोग अनुभूत और तत्काल लाभ दने वाले वर्णन किय ह। इनके अतिरिक्त अनक उपयागी विचार पूर्ण लख हैं जिनकी प्रशसा अनेक सहयोगियों न और वैद्य ने भी की है। मूल्य बिना जिल्द १॥) रु० जिल्ददार १॥।) रुपये।

पता—बांकेलाल गुप्त मैनेजर,
आरोग्यसिन्धु कार्य्यालय पोस्ट विजयगढ़ अलीगढ़।

औपसर्गिक सन्निपात

(प्लेग)

प्लेग की भयंकरता।

(१)

प्लेग कैसी भयङ्कर व्याधि है। कैसी डरावनी मोह-नाशनी यातना है? । भारतीय प्रजाको इस दुष्ट रोग से दुःख पाते हुऐ आज बीस बाईस वर्ष बीत चले किन्तु अभी तक इस मायावी रोग ने हमारा पिण्ड नहीं छोड़ा। साठ पैंसठ लाख मनुष्यों को खाकर भी अभी इसकी क्षुधा शान्त नहीं हुई। भारतवर्ष पहले ही से दीन, बल हीन, और मलीन था, इस सताये हुए को दुःष्ट प्लेग ने और भी सताकर किसी काम का नहीं छोड़ा। हज़ारों माताओं की गोदें प्यारे पुत्रों से खाली होगई। लाखों युवा, जिनसे भारत को बड़ी २ आशायें थीं, जिनके सौरभ से भारत सुवासित होने वाला था, इस ही काल समान रोग के फंदे में फंस, मृत्यु शय्यापर सदैव के लिये सोगये। लाखों स्त्रियों का सौभाग्य कांच के समान टूट फूट गया और वे विधवा बन अपनी शोक कहानी सुना २ कर भारत को रुलाने लगीं। इस ही से प्लेग की भयङ्करता का भारत में डंका बजगया और भारतवासी इस रोग का नाम सुनते ही थर थर कांपने लगे।

जिस नगरमें इस की भयावनी मूर्ति प्रगट होती है वहां जन समूह में भगदड़ मचजाती है। जिन कामनिओं ने अपने सुख सदन से बाहर कभी पैरभी नहीं रक्खा था। वे ही जंगल की हवा खाती फिरती हैं। बड़े २ रईस, सेठ, अपने ऊंचे २ महलों को छोड़ फूंस की झोपड़ियों में पड़ तपस्विओं की नक़ल करके दिखाते हैं। पिता पुत्र का, पुत्र पिता का, मित्र, मित्र का, भाई भाई का, मोह छोड़ नाता तोड़ अपने प्राणों का ही सम्बन्ध स्थिर रखता है। जो स्त्री अपने पति को प्राण प्यारा कहा करती थी, वही प्लेग से सताये पति को पड़ा छोड़ अपने प्राण बचाने का प्रयत्न करती है। तब ही तो कहते हैं कि यह मोहनाशनी व्याधि है!

प्लेग का आयुर्वेदीय मतानुसार
विवेचन ।

प्लेग और अधर्म ।

महर्षि आत्रेय ने जनपदोद्धसक रोगों के चार कारण ऐसे बतलाये हैं जिनका प्रभाव सब मनुष्यों पर समान पड सकता है। वायु, जल, देश और समय, जब इनमें से कोई बिगड जाता है या चारों बिगड जाते हैं तब ही सक्रामक रोग पैदा होते हैं। इन चारों मे विकार क्यों होते हैं ? इसके उत्तर में महर्षि ने केवल "अधर्म" बतलाया है —

यदा नगर निगम-जनपदप्रधाना-धर्ममुत्क्रम्याधर्म्मेण प्रजां प्रवर्तयन्ति, तदाश्रितोपाश्रिताः पौरजनपदा व्यवहारोपजीविनश्च तमधर्म्ममभिवर्तयन्ति ।

जब नगर, देश, और जनपद में रहने वाले प्रधान पुरुष धर्म्म को छोड प्रजा में अधर्म्म का वर्ताव करते हैं तब उनके आश्रित तथा उपाश्रित छोटे२ गावों में रहने वाले या व्यवहार से जीने वाले पुरुष भी अधर्म्म को बढाते हैं। अर्थात् जब बडे २ नगरों में रहने वाले प्रधान पुरुष धर्म्माचरण सदाचार को छोड अधर्म्म को ग्रहण करते हैं तो उनकी देखा देखी उनके आश्रय से रहने वाले पुरुष भी अधर्म को बढ़ाते हैं।

ततःसोऽधर्म्मःप्रसभं धर्म्ममन्तर्धत्ते ततस्तेऽन्तर्हितधर्माणो देवताभिरपत्यजन्ते, तेपामन्तर्हित धर्माणामपक्रान्त देवतानामृतवो व्यापद्यन्ते। तेननापो यथाकालं देवो वर्षति, विकृतं वा वर्षति, वाता न सम्यगभिवान्ति, क्षिति

ज्यापद्यते सलिलान्युपशुष्यन्ति ओषधयः स्वभावं परिहायापद्यन्यते विकृतिम् । ततः उद्ध्वंसन्ते जनपदा स्पर्शाभ्यवहार्य्यदोषात् ॥

बढ़ा हुआ अधर्म्म बलात् धर्म्म को छुपा देता है। जिनका धर्म्म नष्ट हो जाता है उनको देवता छोड़ देते हैं। देवताओं से त्यागे हुए तथा नष्ट धर्म्मी पुरुषों के होने पर ऋतुओं में अन्तर पड़ जाता है जिससे इन्द्र यथोचित समय पर वर्षा नहीं करता या विकार युक्त करता है। वायु ठीक २ नहीं चलता। भूमि के परमाणुओं में अन्तर पड़ जाता है। जल सूख जाता है, ओषधियां अपने नियमित गुणों को छोड़ विकार को प्राप्त हो जाती हैं। जिस से जनसमूह स्पर्श और खानपान के दोष से किसी पैदा हुए रोग द्वारा नष्ट होता है।

भूलोक, तथा द्युलोक का राजा और प्रजा के समान घनिष्ट सम्बन्ध है। भूलोकवासी यज्ञादि कर्म्म करके उनको हवि प्रदान करते हैं। उसके बदले में, स्वर्गीय देव वृष्टि करके अन्नादि प्रदान करते हैं। जब से भारतवासियों ने यज्ञादि कर्म्म करना छोड़ दिया तब से देवताओं ने यथा समय वृष्टि करना छोड़ा (यज्ञाद्भवति पर्जन्यः पर्जन्यादन्नसम्भवः)। जब से देवतत्व को न समझ हमने उन्हें साधारण पुरुष कहकर उनकी भक्ति न की तब से उन्होंने भी हमारी रक्षा करनी छोड़दी। यही कारण है कि आज भारत में अकाल का डंका बज रहा है और बहुसंख्यक भारतवासियों के मुख से अन्न, अन्न जल, जल यही आर्तनाद निकलता है।

अब विचार कीजिये कि महर्षि का बतलाया हुआ अधर्म्म रूपी कारण इस समय विद्यमान है या नहीं। भारत ने अध्यात्म्य ज्ञान में पूर्ण उन्नति की थी, भारत को सब से प्यारा धर्म्म था, भारत की रीति, नीति, खान, पान, व्यवहार आदि सबही विषयों में धर्म्म अधर्म्म का विचार था। तब भारत भी पूर्ण सुखी था, सबही बातों में उन्नत था। अब उस धर्म प्राण की क्या दशा है ? क्या वेदध्वनि से आकाश गूंजरहा है? क्या यज्ञादिकों का स्वाहा २ रूप महनादकर्ण-

गोचर होता है ? क्या तपश्चर्या से जीर्ण शरीर वाले जटा जूट धारण करने वाले पवित्रात्मा साधुओंके चरणोंसे नगर पवित्र होते हैं? क्या गगादि तीर्थो पर स्नानादि से शुद्ध हो सत्संगति का पीयूष पान किया जाता है ? क्या मिथ्या आहार विहार का परित्याग कर देश काल प्रकृति अनुसार व्यवहार कर शारीरिक धर्म का पालन किया जाता है, जिससे समझा जाय कि धर्म देव अब भी भारत म शुभ दर्शन दे रहे हैं।

आज विपरीत समय है। वेदध्वनि के स्थान में वेश्याओं के तान टप्पे सुनने में आते हैं। ढोंगी साधुओं का आदर होता है। तीर्थो पर सत्सगति को त्याग मनभावनी कामिनिओं के मुखों को चन्द्रमा की उपमा देकर नेत्रों को कलङ्कित किया जाता है। शारीरिक धर्म की परवा न कर नो दो ग्यारह की चिन्ता लगी रहती है। होटलों में विसकुट सोडा वाटर लेमिनेड के रसों से रसना रसवती होती है। यही कारण है कि आज प्लेग द्वारा हमारे दुष्कर्मो का दण्ड मिल रहा है।

फैलनेवाले रोगों केचार कारण।

महर्षि आत्रेय से अग्निवेश ने पूँछा कि महाराज ! मनुष्योंकी प्रकृति, आहार, विहार, सत्व आदि समान नहीं होते फिर क्या कारण है कि एक समय में एक रोग से बहुत से मनुष्य नाशहो जाते हैं। महर्षिने कहा कि हे अग्निवेश ! इन प्रकृत्यादि भावों के सिवाय और भी ऐसे कारण है जिनका योग सम्पूर्ण मनुष्यों पर समान भाव से पडता है। वे कारण वायु, जल, देश, और काल हैं। इसलिये यदि इनमें विकार हो जावे तो उस देशमें रहने वाले सम्पूर्ण मनुष्यों को उस विकृति का फल समान रूप से भोगना पडता है। प्लेग भी ऐसा ही रोग है। अत इसके भी बिगड़े हुए वायु, जल, देश और काल ये चारों ही कारण हैं। जब इनमें विकार होता है तब क्रमश निम्नलिखित लक्षण होते हैं।

नाम	लक्षण
वायु	ऋतु विपरीत, अतिशीतल अतिउष्ण, अतिरूखी जिसमें धूल, धुआ, और भाफ अधिक मिले हों, प्रचण्ड वेग से चलने वाली दुर्गन्धि युक्त, तथा अन्य विपरीत भावों सहित वायु विकार वाली जानना।
जल	जिसके गन्ध, वर्ण, रस (जायका) स्पर्श विगड गये हों, जिसको पीने की इच्छा न होती हो, जो ऐसे जलाशय से लिया गया हो जिसमें जल को शुद्ध करने वाले-जल चर, विहगादि न रहते हों या जल सूखकर थोडा रह गया हो। वह जल भी विगडा हुआ जानना।
देश (भूमि)	भूमि का स्वभाव बदल जाना, मिट्टी के गन्ध, वर्ण, स्पर्श में परिवर्तन होना, भूमिमें गीलापन अधिक होना। दूषित भूमि के विकार से भूमि में रहने वाले मूषक, घूस, आदि जीवों का वाहर निकल कर मरना, साप, हिंसक, कीट, टीढ़ी, मच्छर, मक्खी, उल्लू मरघट में रहने वाले पशु पक्षियों का इकट्ठा होना। देश के ढँग में पहिले की अपेक्षा विलक्षणता होना, कुत्तों और शृगालों का रोना, सितारों का अधिक टूटना, भूकम्प होना, धर्म सत्य, लज्जा, आचार आदि शुभ गुणों का नष्ट होना, जीवों में घवडाहट, डर, और उदासी होना, बादलों का घिरा रहना। विगड़े हुए देश या भूमि के लक्षण हैं।
काल (समय)	जिसमें ऋतुओं के विपरीत वर्ताव हों जैसे ग्रीष्म में गरमी न पडना या अति गरमी पडा। वर्षा में सूखा या घोर वृष्टि आदि, तो यह समय भी विगडा हुआ जानना।

अनुभव से जाना जाता है कि प्लेग रोग में सब से अधिक भूमि दूषित होती है क्यों कि प्लेग के समय दूषित भूमिके बहुत से लक्षण मिलाते हैं। ऋतुओं का यथायोग्य वर्ताव न होने से वायु में तथा वायु स जल, और भूमि में अन्तर पड जाता है जिससे पृथ्वी में विषैल परमाणु या कीट उत्पन्न हो जात हैं। और वे विषैल परमाणु अपन समा अन्य परमाणुओं को खींच कर या वनाकर भमि को अधिक

विषैली करते हैं। जैसे पृथ्वी में पड़ा बीज यथोचित वर्ताव होने पर अपने समान गुणवाले परमाणुओं को खींचता हुआ बढ़कर वृक्ष बन जाता है। जैसे कि नीम का बीज अपने समान कड़वे परमाणुओं को खींचता हुआ या परमाणुओं को कड़वे बना कर इकट्ठा करता हुआ बढ़ता है। वैसे ही भूमि में उत्पन्न हुए विषैले परमाणु अपने समान अन्य परमाणुओं को भूमि में बढ़ा देते हैं। उन विषैले परमाणुओं में उत्पादन शक्ति (अपने समान अन्य परमाणुओं को उत्पन्न करने वाली शक्ति) विशेष है अर्थात् वे बहुत शीघ्रता से अपने समान परमाणुओं को उत्पन्न करते हैं इससे थोड़े ही समय में पृथ्वी का विशेष भाग विषैला होकर प्लेग को उत्पन्न करता है इसही कारण प्लेग के पूर्व रूप में पृथ्वी में रहने वाले मूषकादि जीव मरने लग जाते हैं।

पृथ्वी के गुणों की परीक्षा अन्य जीवों की बनिस्बत मूसों को अधिक होती है। पृथ्वी में गड़ी हुई वस्तु को वे बहुत जल्दी जान लेते हैं। ज्योतिष के ग्रन्थों में मूषकों द्वारा कूपखोदने के समय जल परीक्षा तथा देश परीक्षा लिखी हुई है। पृथ्वी का विकार मूषकों को अति शीघ्र हानि पहुँचाता है। क्योंकि वे सदैव उस में भिटा खोद कर रहते हैं। इसे आप प्रत्यक्ष देख सक्ते हैं कि जिस स्थान में मूसे तथा अन्य जीव जियादा हों वहां विषैली औषधि जिसका कि प्रभाव पृथ्वी में पड़ता हो रख दीजिये सबसे पहले मूसे ही भाग निकलेंगे जहां कोई आपत्ति आने वाली होती है तो मूसे वहां से भाग निकलते हैं। यह एक समुद्र यात्रा करनेवाले महाशय ने हम से कहा कि "जहाज के ड्रायवरों से ज्ञात हुआ है कि जब जहाज डूबने को होता है तो उस जहाज से मूसे बाहर निकल २ कर भागने लग जाते हैं।

मूषकादिकों के मरने से और उनकी सड़न से विषैले परमाणु या कीट पृथ्वी में एक दम बढ़ जाते हैं। यहां तक कि वे वायु के साथ मिलकर मनुष्यों के शरीरों में प्रविष्ट हो प्लेग को उत्पन्न करते हैं। उन परमाणुओं से सर्पादि विषैले जीव नहीं मरते, क्योंकि उन में विष का भाग अधिक रहने से पृथ्वीजन्य विकार उनपर असर नहीं करता।

विकारयुक्त वायु तथा जल इतनी हानि नहीं पहुंचाते जितना कि देश और काल पहुंचाता है। वायु और जल में गुणों का परिवर्तन आज नहीं किन्तु दीर्घकाल से चला आता है। समयानुकूल वृष्टि बहुत दिनों से नहीं होती है परन्तु उससे शारीरिक हानि इतनी नहीं हुई जितनी कि इस समय देश और काल बिगड़ने से हुई है। भारतमें पृथ्वी जन्य विकार को २०। २५ वर्ष का ही न समझना चाहिये किन्तु बहुत समय से इस में सूक्ष्म रूप से विकार चला आ रहा है। इस समय अधिक विकार होने से वह प्लेग सरीखे रोगों को उत्पन्न करने लगा है। और बहुत यत्न करने पर भी दीर्घकाल का विकार होने से अभी तक शान्त नहीं हुआ।

महर्षि चरककार ने लिखा भी है :-

वाताज्जलं जलाद् देशं देशात्कालं स्वभावतः।
विद्यादपरिहार्य्यत्वाद्गरीयः परमार्थवित् ॥

अर्थ-तत्व का जानने वाला वैद्य, हवा से जल को, जल से देश को और देश से समय को दुस्त्यज जानकर उत्तरोत्तर कठिन समझे।

आयुर्वेद मतानुसार प्लेग कौन रोग है ?

प्लेग एक विदेशी नाम है जिसका कि अर्थ झटका है। इस रोग का झटका अत्यन्त तीव्र और सहसा होता है जिससे इस रोग का नाम प्लेग रक्खा गया। अब विचार यह करना है कि आयुर्वेदीय मतानुसार हम इसे कौनसा रोग कहें? पहिले भी इस बात का विचार हो चुका है किन्तु सब वैद्यों का मत समान नहीं है। आज कल इस रोग के अग्निरोहिणी, ग्रन्थिज, विसर्प, विद्रधि, मूत्रविषोपद्रव, ग्रंथिज ज्वर या सन्निपात नाम बतलाये जाते हैं इसलिये यहा पर विचार करना है कि प्लेग के कारण, लक्षणादि इन रोगोंसे मिलते हैं या नहीं। और यथार्थ में यह रोग किस नाम से पुकारा जावे।

(१) अग्निरोहिणी-इस रोग में मांस को विदीर्ण करने वाले फोड़े पास में निकलते हैं और उनमें अग्नि के समान दाह होता

है। ज्वर आता है। और रोग असाध्य कहा गया है। किन्तु प्लेग का अग्निरोहिणी कहने में कई प्रकार की बाधायें हैं। (१) प्लेग में फोड़े नहीं निकलते किन्तु गिलटी निकलती है (२) बिना गिलटी निकले भी प्लेग होता है (३) यदि फोड़ों को गिलटियां ही मान लें तो यह भी निश्चित नहीं कि वे कांख में ही निकलती हैं (४) अग्निरोहिणी सक्रामक रोग नहीं है जिससे कि यह रोग अनेक मनुष्यों में फैल जावे (५) अग्निरोहिणी के ऐसे कारण नहीं जिन का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर समानता से पडता हो। इतनी विप रीत बातों के होते प्लेग को कौन अग्निरोहिणी कहेगा ?

(२) विसर्प-विसर्प को उत्पन्न करने वाले कारण भी ऐसे नहीं हैं जिनसे एक समय में बहुतसे रोगी बीमार हो जावें। विसर्प के कारण (लवणाम्ल कट्वुष्णादि सेवनाद्दोष कोपत) अर्थात् खारी, खट्टे, चरपरे गरम पदार्थों का सेवन करना है। उनसे दोष कुपित होकर विसर्प पैदा करते है। इस प्रकार के मिथ्याहार बहुत से पुरुष एक साथ नहीं करते फिर कैसे विसर्प अनेक पुरुषों का एक साथ हो जावेगा ? और न ग्रन्थिज विसर्प के लक्षण ही प्लेग से मिलते हैं केवल ग्रन्थि मात्र की समानता स प्लेग विसर्प नहीं कहा जा सकता।

(३) विद्रधि-वैद्यक शास्त्रानभिज्ञ किसी महाशय ने अपनी पुस्तक में इसे विद्रधि ही लिख मारा है, जब सुश्रुताकार विद्रधि के लक्षण (त्वग्रक्त मास मेदासि प्रदूष्यास्थि समाश्रिता । दोषा शोफ शनैर्घोर जनयत्युच्छ्रिता भृशम्) इस प्रकार लिखते हैं। जिस का कि भावार्थ यह है कि हड्डियों में टिके हुए दोष त्वचा रक्त मास मेद इनको बिगाड़ कर धीरे २ घोर ऊची सूजन को उत्पन्न करते हैं तो कहिये प्लेग को विद्रधि हम कैसे कहदें। विद्रधि से न शीघ्र मृत्यु होती है, न इसके लक्षण मिलते है, न सक्रामक है तब प्लेग को विद्रधि कहना सरासर भूल है या नहीं।

(४) मूषिक विष-बहुत से माननीय वैद्य इसे मूषिक विष कहते हैं। मूषिक विष के कहने वाले और मानने वाले वैद्यों की सख्या

उपर्य्युक्त रोगों के अनुमोदकों से अधिक है। बहुत से डाक्टर लोग भी इसे मूसों की बीमारी मानते हैं और "जहां चूहा नहीं वहां प्लेग नहीं" ऐसा कहते हैं। सुश्रुत में "मूषिक कल्प" एक अध्याय है और उसमें सविष मूषिकों के लक्षण तथा उनसे पैदा होने वाले रोगों का विस्तारपूर्वक विवेचन है। उस अध्याय में मूषिक विष के सम्बन्ध में कहा गया है कि:—

लालनः पुत्रकः कृष्णो हंसिरश्चिकिरस्तथा ।
छछुन्दरोल सश्चैव कषायदशनोपिच ॥
कुलिंगश्चाजितश्चैव चपलः कपिजस्तथा !
कोकिलारुणसंज्ञश्च वमकृष्णस्तथोन्दुरः ॥
श्वेतेन महतासार्द्धं कपिले नाखुना तथा !
मूषिकश्च कपोताभस्तेथचाष्टादशस्मृताः ॥
शुक्रं पतति यत्रैषां शुक्रघृष्टैः स्पृशन्तिवा !
नखदन्तादिभिस्तस्मिंगात्रे रक्तं प्रदुष्यति ॥
जायन्तेमन्थयः शोफाः कर्णिकाः किटिभानिच !
पर्व भेदो रुजस्तीव्रा ज्वरो मूर्च्छा च दारुणाः ॥
दौर्बल्य मरुचिः श्वासो वेपथुर्लोमहर्षणम् !

भावार्थ—लालन पुत्रकादि १८ सविष मूसे होते हैं। इनके वीर्य्य में प्रधानता से और नख दन्त मल मूत्रादिकों में सामान्यता से विष रहता है। जिस पुरुष का शरीर सविष मूसे के वीर्य्य से लग जावे, या सविष मूसों के वीर्य से सने हुए या रगड़ा लगे हुए वस्त्रादि पदार्थों से छू जावे, उस शरीर में रक्त कुपित हो जाता है जिससे गांठ (गिलटी) सूजन, कर्णिका, चक्ते, फुड़िया, किटिभि, उत्पन्न होते हैं। पर्वों में दर्द, पीड़ा, ज्वर, मूर्च्छा, दुर्बलता, अरुचि, श्वास, कप, रोमहर्ष आदि उपद्रव होते हैं। मूषिक विष से जो गिलटियां निकलती हैं वह मूषिकाकार होती हैं।

मूषिक विष के बहुत से लक्षण प्लेग से मिलते हैं सही, जैसे गिलटी निकलना, ज्वर होना श्वास होना, सन्धिशूल, बेहोशी आदि, परन्तु प्लेग को मूषिक विष कहने में फिर भी अनेक आपत्तियां हैं।

(क) मूषिकविष क्या सक्रामक रोग है ? जनविध्वंसक है ? वैद्यक शास्त्रों में मूषिकविष सक्रामक नहीं माना और न है। सर्पादि जीवों के काटे हुए पुरुष के उपचार करने वाले तथा मरने पर फूकने वाले पुरुषों को कभी विष का प्रवेश होता देखा गया है ? मूषिकविष यदि प्लेग के समान सक्रामक और जनविध्वंसक होता तो भगवान धन्वन्तरि अपने सुश्रुत में "मूषिक" अध्याय को लिखकर भी क्या यह न लिखते कि मूषिक विष संसार को कंपाने वाला है और इससे कोई भाई का लाल ही बचता है, अतः इससे सदैव अपनी रक्षा करनी चाहिये।

(ख) प्लेग होने से पूर्व जब चूहे ही अधिक मरते हैं तो इनके मारने वाला कोई दूसरा कारण या उपद्रव अवश्य है इस पर विचार करना चाहिये। मूसों का विष मूसों को नष्ट नहीं कर सकता हां उन्हें विषैले बना सकता है। सर्प का विष सर्प का नाश नहीं कर सकता, और न सुश्रुतादि ग्रन्थों में सविष मूसों द्वारा निर्विष मूसों का ध्वंस होना लिखा है।

(ग) सुश्रुत संहिता के "मूषिककल्पाध्याय" को विचारपूर्वक देखने से यह जाना जाता है कि १८ प्रकार के सविष मूसे होते हैं, और वे कहां २ पाये जाते हैं, जब उनकी वीर्य्य, या नखदन्तादि से स्पर्श होजाता है जो उस स्पर्श हुए गात्र में गिलटी निकल आती है तथा अन्य उपद्रव होते हैं। मूषिक विष बड़ा भारी भयङ्कर शीघ्र प्राणनाशक रोग है यह बात उससे नहीं मालूम देती। भगवान् धन्वन्तरि लिखते हैं कि –

मूषिकानां विषं प्रायः कुप्यत्यभ्रेषु निर्हृतम् ।
तत्राप्येष विधिः कार्योयत्र दूषीविषापहः ॥
स्थिराणां रुजतां वापि व्रणानां कर्णिका भिषक् ।
पाटयित्वा यथा दोषं व्रणवच्चापि शोधयेत् ॥

अर्थात् चिकित्सा करने से (शरीर में) शेष बचा हुआ मूषिक विष वर्षाऋतु में कुपित होता है उस समय दूषीविष नाशक उपचार करे, जो कड़े और दर्द करने वाले व्रण हैं उनकी किनारी चीर कर पीछे दोषानुसार व्रण के समान चिकित्सा करे। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि मूषिक विष शीघ्र मारक नहीं है।

(घ) मूषिक विष की गिलटी जिस स्थान पर उसके वीर्यादि से स्पर्श हो वहां ही होती है। और प्लेग की गाठ सन्धि स्थानों में। तो क्या वीर्य्यादि का स्पर्श सन्धियों से ही होता है ?। और प्लेग की गाठें क्या मूषिकाकार ही होती हैं? और विना गांठों के भी तो प्लेग होता है ? फिर उसे क्या कहेंगे ?। फोड़े, कर्णिका, शोजा, चकते, विसर्प आदि लक्षण प्लेग में एक भी नहीं देखे जाते।

(ङ) प्लेग से पूर्व जब चूहे मरते हैं तब उनकी विचित्र अवस्था देखी गई है, वे अपने भिटों से (जिन्हें कि वे सब से अच्छे रक्षा करने वाले समझते हैं) घबडाते हुए बाहर निकलते हैं। मालूम होता है कि इन्हें किसी बडी विपत्ति ने घेरा है, शरीर की कुछ सुध नहीं है, दो चार चक्कर खाकर उनके प्राणों का अन्त हो जाता है। उनका शरीर फूल जाता है कोई २ खून डाल कर मरते हैं। मरने बाद देखा गया है कि उनके शरीर पर बहुत छोटे २ अनगिनत जीव चुपटे हुए होते हैं। चूहों का शरीर नीला पड़ जाता है।

इससे मालूम होता है भूमि के विषैले परमाणु सूक्ष्म जीव बन कर इन पर आक्रमण करते हैं यदि मूषकों का विषोपद्रव होता तो सूक्ष्म जीवों का शरीर से चिपटे रहना योग्य न था।

(च) कई स्थानों में देखा गया है कि जब प्लेग का खूब ज़ोर होता है तब बन्दर, गिलहरी, तोता इत्यादि भी अधिकता से मरने लगते हैं।

इससे सिद्ध होता है कि जब विषैले परमाणु अधिकता से वायु में मिल जाते हैं तब उनका प्रभाव, पक्षियों तक पहुच जाता है।

(छ) यदि विचार कर देखा जाय तो मूसों द्वारा हमारी रक्षा हुई है, बिचारे मूसे अपने प्राणों का नोटिस बनाकर आपको सावधान करते हैं कि लीजिये हम अपने प्राणों को छोड़ते हैं। आप अपने बचने का उपाय कीजिये। बहुत से विचारशील पुरुषों ने जिन

के मकानों में चूहे न थे इसलिये चूहों को खरीद कर अपने मकानों में रक्खा कि ये प्लेग से हम को सावधान करेंगे। और ऐसा ही हुआ। उन्होंने मूल्य के बदले अपने प्राण देकर उन्हें सावधान किया। सच पूछिये तो हम लोगों के कारण ही उन पर आपत्ति आती है। यदि हमारे अशुभ कर्म न होते तो क्यों उनको आपसे पहले अपने प्राण छोड़ने पड़ते। इसलिये कौन कह सकता है कि कपड़े कतरने वाले इन गणेशवाहनों की भारत पर चढ़ाई है।

(५) ग्रन्थिज ज्वर या सन्निपात-यह नाम शास्त्रीय नहीं है किन्तु कल्पित है। कल्पित नाम रचना शास्त्रानुसार है और हम भी आगे चलकर सिद्ध करेंगे। इस नाम में केवल इतनी ही आपत्ति है कि प्लेग बिना गांठ निकले भी होता है इस से प्लेग का "ग्रन्थिज ज्वर" नाम रखना सर्वांश में ठीक न होगा।

अब हमारे पाठक कहेंगे कि फिर यह रोग किस नाम वाला है? और प्लेग के लक्षणों से उसके लक्षण मिलाइये। यदि ठीक २ लक्षण जैसे कि इस समय प्लेग में देखे जाते हैं आयुर्वेदीय शास्त्रानुसार न मिलें तो समझा जायगा कि आयुर्वेदीय सद्ग्रन्थ भी उक्त रोग के परिज्ञान में अकुशल हैं। परन्तु ऐसा कहना आयुर्वेदीय सिद्धान्तों की अज्ञानकारी बतलाता है।

किसी रोगी के सम्पूर्ण लक्षण शास्त्रवर्णित किसी रोग से न मिलने पर यह कभी नहीं कहसकते कि इस रोग का परिज्ञान शास्त्रानुसार नही होसकता। आयुर्वेदीय किसी ग्रन्थ का यह सिद्धान्त नहीं है कि जिन रोगों का हम नाम द्वारा विवर्ण कर चुके हैं उनसे अधिक रोग हो ही नहीं सके। किन्तु न्यूनाधिक दोषों के सम्मिलन से तथा देश समय प्रकृति के भिन्न २ बर्ताव होने पर अनेक रोग उत्पन्न हो सके हैं, और ऐसे रोगों के उत्पन्न होने पर स्वयं सद्वैद्य उनका नाम नियतकर तथा दोषादिकों को विचार कर उनकी चिकित्सा कर सका है। चरक में भी यह सिद्धान्त अच्छी प्रकार पुष्ट किया गया है।

विकाराणामकुशलो न जिह्रीयात्कदाचन ।
नहि सर्वे विकाराणां नामतोस्ति ध्रुवस्थितीः॥

अर्थात आयुर्वेद के ग्रन्थों में नाम द्वारा जिन रोगों का विवर्ण नहीं किया गया (और वे रोग नवीन पैदा हुए हों) तो उनका नाम रखने में सद्वैद्यों को कभी लज्जा न करनी चाहिये क्योंकि सम्पूर्ण रोगों का नाम ही है यह निश्चय नहीं किया गया। यह चाल पुरातन से चली भी आई है। फिरंग रोग जो कि भारतवर्ष में फिरङ्गियों के आगमन के पीछे उनके संसर्ग से उत्पन्न हुआ है बड़े २ ग्रन्थों की रोग गणना में इस का नाम तक न होने पर भी भाव मिश्र ने नाम नियत कर उसके उपचारादि स्वरचित भाव प्रकाश ग्रन्थ में लिखे हैं। इसी प्रकार मोतीज्वर का चरकादि बड़े २ ग्रन्थों में कहीं किञ्चित मात्र भी उल्लेख न होने पर मनुष्यों को इस नवीन रोग से पीड़ित देख पीछे से सुवैद्यों ने इस का नामकरण कर दूर करने का प्रयत्न किया है। इस ही प्रकार हम और भी कई रोगों की बाबत लिख सकते हैं, यथा —

सम्पूर्ण आयुर्वेदीय ग्रन्थों में इस समय चरक पुराना है इसके पीछे सुश्रुत और सुश्रुत के पीछे और सब ग्रन्थ बने हैं। चरककर्ता ने अपने समय की रोग गणना में लिखा है कि "चत्वारोऽक्षिरोगा" चत्वारः कर्ण रोगा चत्वारः प्रतिश्यायाः चत्वारोमुखरोगा, पञ्चशिर रोगा, अर्थात्—आंख, कान, नासिका, मुख के चार २ और पांच शिर के रोग हैं परन्तु सुश्रुत में इन ही रोगों की गणना बहुत अधिक लिखी गई है।

षट्सप्ततिर्नेत्ररोगाः दशाष्टादशकर्णजाः
एकत्रिंशद् घ्राणगताः शिरस्यैकादशैह तु
इति विस्तरतोदृष्टाः सलक्षणाचिकित्सिताः
संहितायामभिहताः सप्तषष्टिर्मुखामयाः॥२॥

भावार्थ—७६ नेत्र रोग २८ कर्ण रोग ३१ नासिका रोग ११ शिरोरोग ६७ मुख रोग ये सुश्रुत संहिता में लक्षण और चिकित्सा सहित विस्तार से कहे गये हैं।

जबकि आयुर्वेदीय सिद्धान्तानुसार नवीन रोगों का नाम नियत करने का नियम है। और ऐसा हुआ भी है तो क्यों आजकल की विचार क्षमा वैद्यमंडली इस दुष्ट रोग के सम्पूर्ण लक्षणादि शास्त्रों में न मिलने पर इसका कल्पित नाम नहीं रखती और इसके उपायों की योजना नहीं करती। बड़ा आश्चर्य है कि विदेशीय चिकित्सक तो अपने बुद्धि बल से नवीन २ रोगों का आश्चर्य जनक परिज्ञान कर संसार को विस्मित कर, और हम हाथ पर हाथ रखे हुए अपनी बुद्धि को कुछ भी परिश्रम न दें। -

आज भारतवर्ष में फिर से उन्नतिकारक महोत्साह पैदा हुआ है परन्तु हमारा वैद्य समुदाय अब भी गूढ़ निद्रा में सोरहा है। यदि इस समय भारतवर्षीय वैद्य एक बड़ी सभा करके इस रोग का निश्चय कर शीघ्र गुणकारक उपचारादि बनाकर अपनी बुद्धि का परिचय देते तो संसार भरके डाक्टर लोग एक मुख से आप की गुणावली गाते। खैर अब यह विचार करना शेष रहा कि इस रोग का क्या नाम नियत करें।

जब चरक महर्षि स्वीकार करते हैं कि देश में अधर्म्म के बढ़ने पर वायु जल देश काल इन चारों में विकार पैदा होकर कोई ऐसा रोग उठखड़ा होता है जिससे देश के देश नष्ट होजाते हैं तो इतनी बातें बहुत अच्छी तरह मिलने पर इस रोग को जनपदोद्धंसक और औपसर्गिक कहने में कोई सकोच न करेगा। परन्तु महर्षि ने जनपदोद्धंसनीय अध्याय में कोई एक रोग का नियम नहीं किया कि इन लक्षणों वाला रोग पैदा होकर जनविध्वंस करता है। केवल यह कहा है कि वायु, जल, देश, काल में अन्तर पड़ जानेसे रोग उत्पन्न हो जनपदोर्द्धस करता है। इससे मालूम पड़ता है कि समयानुसार अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो सकते हैं जिनके लक्षण अनिश्चित हैं। प्लेग रोग में रोगी को तीव्र ज्वर आता है और रक्त में विष का समावेश होने से तीनों दोष कुपित होते हैं। प्लेग वाले की अवस्था सन्निपात से अधिक मिलती है और सन्निपात के लक्षण भी बहुत मिलते हैं। सन्निपात के समानही मृत्यु होती है इससे मुरादाबाद निवासी विद्वान वैद्य दुर्गादत्त जीपथ का निश्चय किया "औपसर्गिक सन्निपात" प्लेग को कहना बहुत समीचीन है। इस ही प्रकार "जनविध्वसक सन्निपात" नाम भी युक्ति सगत प्रतीत होता है।

प्लेग का निदान

"कारण लक्षणादि"

जिस देश में मनुष्यों के सदाचार नष्ट हो जावें, धर्मप्रेम नष्ट होकर अधर्म्म में प्रवृत्ति हो, देशानुराग, दया, सत्य, लज्जा आदि गुण दूर होवें, शासनकर्ता पुरुष प्रजापालन में उपेक्षा करें, उस देश में वर्षा ठीक समय पर नहीं होती, ऋतुओं का वर्ताव ठीक नहीं होता, वायु, जल, देश, और समय इन चारों में विकार हो जाता है जब ऋतुओं का वर्ताव कई वर्ष तक यथोचित नहीं होता तब भूमि में एक प्रकार का विष पैदा हो जाता है। कभी २ ऐसा विष दूसरे देशों से भी मनुष्यों, जीवों, और वस्तुओं के साथ आ जाता है, और वह बिगड़े हुए देशादिकों को पाकर भूमि को विषैली बना देता है। यह विष पृथ्वी के अन्दर कुछ निचाई में रहा आता है। और बहुत दिन पड़ा रहता है। जब उसे दूषित हवा, जल, आदि बाह्यकारणों की सहायता मिलती है तब उस का प्रकोप होता है। विष का कोप होने से उसके परमाणु या छोटे २ विषैले कीट बनकर पृथ्वी से बाहर निकलते हैं। पृथ्वी में रहनेवाले, मूसों को ही वे पहले अपना शिकार बनाते हैं। मूसों के शरीरों से विषैले कीट चुपट कर उन्हें मारडालते हैं। ऐसे कीटों से तंग आकर बहुत से चूहे बिलों के अन्दर ही मर जाते हैं और बहुत से बाहर निकलकर घूमते हुए अपना प्राण छोडते हैं। चूहों का शरीर फूल जाता है। मरे हुए मूसों के सड़ने से विषैले जीव एक दम बढ़ जाते हैं और उनकी दुर्गन्धि के साथ २ वायु में मिलकर प्राणियों पर आक्रमण करते हैं जिन स्थानों की हवा अच्छी होती है, भूमि आर्द्र नहीं होती, भूमि की वाष्प निकलने को खुला मैदान होता है, सूर्य्य का प्रकाश पहुंचता है, जल शुद्ध होता है, वहां पृथ्वी में विष होने पर भी वह बाह्य कारणों के न मिलने से बाहर न निकल कर भीतर ही पड़ा रहता है। शहरों की तंग गलियों में जहां प्रकाश नहीं पहुंचता, छोटे २ मकानों में बहुत से आदमी रहते हैं, मलमूत्रादि की सफाई का इन्तजाम कम होता है ऐसे स्थानों में इन कीटों के बढ़ने में देरी नहीं लगती।

भूमिज विष त्वचा द्वारा, या खाने पीने तथा श्वास के साथ मनुष्यों के शरीर में प्रवेश करता है। विष के परमाणु या कीट रक्त के साथ मिल उसे एक साथ क्षुभित कर देते हैं। जिससे तीव्र ज्वर आता है, और तीनों दोष कुपित हो "औपसर्गिक सन्निपात" उत्पन्न करते हैं इस सन्निपात में सन्धि स्थानों में शूल अथवा गिलटियां निकलती हैं ज्वर आते ही रोगी बेहोश हो जाता है, नेत्र फटे हुए और लाल होते हैं प्रलाप, श्वास, दाह, अतिसार, सर्वाङ्ग शूल, कास, पार्श्वशूल, कफके साथ रक्त का आना, शिर इधर उधर पटकना, आदि लक्षण होते हैं। बहुत से रोगियों को एक दिन रोग में कमी मालूम देती है। रोगी को होश हो जाता है। किन्तु पुन: दोषों का प्रकोप हो पहले से और भी कठिन अवस्था हो जाती है।

औपसर्गिक सन्निपात में रोगी की मृत्यु शीघ्र होती है। कोई २ रोगी एक दिन में ही मर जाता है अधिकतर रोगी तीन या पांच दिन में मर जाते हैं। सन्निपात में धातुओं के पाक होने से रोगी मरता है और दोष पाक होने से बच जाता है। इस सन्निपात में विष प्रवेश होते ही धातुओं के स्रोत रुक जाते हैं या बिगड़ जाते हैं। इससे उन स्रोतों से निकलने वाली रक्तादि धातु पक जाती हैं। अर्थात् उनमें पीव पड़ जाता है। यह धातु पाक बहुत जल्दी होता है। चरक संहिता में "स्रोतो विमानीय" अध्याय के देखने से स्रोत सम्बन्धी बहुत सी बातें मालूम देती हैं। जैसे अन्न के स्रोत, आमाशय, और आहार नलिका, विष्ठा के स्रोत, स्थूलान्त्र, और गुदा, मूत्र के स्रोत बस्ति और वङ्क्षण, रक्त के स्रोत रक्तवाहिनी शिरा और यकृत प्लीहा, प्राणवायु के स्रोत फफड़े, ज्ञानेन्द्रियों के स्रोत मस्तक हैं। सन्निपात में स्रोतों में पाक अवश्य होता है क्योंकि "स्रोत सापाक" ऐसा वाक्य सन्निपात के सामान्य लक्षणों में लिखा है। स्रोतों में अधिक खराबी पहुंचने से रोगी नहीं बचता। यदि स्रोत कम बिगड़े और ये स्रोत मर्म स्थान, या मर्म स्थान के समीप न हों तो रोगी बच भी जाता है।

औपसर्गिक सन्निपात में लसीका के स्रोतों में विकृति विशेष पाई जाती है जिससे बाहर की ओर गिलटी निकलती हैं। यदि भीतरी स्रोतों में बिगाड़ हो तो भीतर गिलटी निकलती हैं। कभी २

पुरीषवह स्रोत अर्थात्, आन्तों और प्राणवह स्रोत (फेफड़ों में) भी विकार पाया जाता है। गर्दन की गिलटी, और बगल की गिलटी मर्म स्थानों के पास होने से मारक है। जंघा की गिलटी मर्मस्थान से दूर होने से उतनी मारक नहीं।

औपसर्गिक सन्निपात सक्रामक रोग है। उपसर्गज रोग "औपसर्गिक रोगाश्च संक्रामन्तिनरान्नरम्" एक से दूसरे पर आक्रमण करते हैं। रोगी के शरीर से निकले हुए विषैले कीट या परमाणु, दूसरे मनुष्यों के शरीरों में प्रवेश कर रोग पैदा करते हैं।

दोष भेद से लक्षण

नाम	लक्षण
वातोल्बण औपसर्गिक सन्निपात	शरीरमें शूल, ज्वर का विषम वेग, प्रलाप, कम्प मोह, भ्रम, निद्रानाश सन्धि स्थानों में गिलटी, संज्ञानाश, पर्वभेद, नेत्रोंमें निद्रा इत्यादि
पित्ताधिक्य	दाह, ज्वर का तीव्र वेग, बेहोशी, मोह, स्वेद, भ्रम, खखार के साथ खून आना; नेत्रों में सुर्खी, नेत्रों में निर्भुग्नता, हृत्‌हृफी, गिलटीमें दाह, चीस, वमन, दस्त आदि।
कफाधिक्य	शरीर का गिलगिला रहना, ज्वर का मन्द वेग, गिलटी का देर से पकना, हृदय, पार्श्व, और फैफड़ों में दर्द, खासी, कफ, अरुचि रोमहर्ष आदि।
	दोषों के न्यूनाधिक सम्मेलन से लक्षणों में भी भेद हो जाता है।

डाक्टरी अनुसन्धान।

प्लेग को उत्पन्न करने वाले एक प्रकार के कीड़े होते हैं। इनकी जन्मभूमि उत्तरीय आफ्रिका के लिबिया (Lebya) मिसर और श्याम देश में है। और अब भारत में भी पाये जाते हैं। ये जहरीले

कीड़े लिविया की ज़मीन में ४०-५० इंच नीचे मिलते हैं इन कीटोंको पिस्सू खा जाते हैं, और पिस्सू चूहों के शरीर पर चिपट कर उन्हें भी विषैले बना देते हैं। जिससे वे चूहे बहुत जल्दी मर जाते हैं। चूहों के रुधिर में इन पिस्सुओं का असर बहुत जल्दी होता है। जब चूहे मर जाते हैं तो उनसे बहुत से प्लेग के कीड़े पैदा होते हैं। चूहे से निकलने वाले कीटों का आकार दो सरसों के बीच एक सन्तु (०-०) के समान है। वे इतने बारीक होते हैं कि बाल की नोक के नीचे कई कीट रह सकते हैं। छोटे होने पर भी वे इतने भयङ्कर हैं कि एक नन्हा सा कीट एक आदमी के प्राण लेने में समर्थ है। चूहे के खून में यह बहुत जल्दी बढ़ते हैं एक के सौ और सौ, के नौ नौ सौ तक हो जाते हैं। पिस्सू के पेट में ज़हरीले कीट रहते हैं। सर्दी और वर्षातकाल में जब कि भूमि में कीचड़, मैलापन और ठण्ड हो इनका बढ़ाव बहुत शीघ्र होता है। सबसे पहले शीतकाल में प्लेग के कीट आकर रोग पैदा करते हैं। और पीछे अपना अड्डा जमाकर अन्य ऋतुओं में भी घृणित और अपवित्र पदार्थोंसे बढ़कर आक्रमण करते हैं। गरमी और धूपसे इनका नाश होता है। ये सूक्ष्म जन्तु अधिकतर मनुष्यों की त्वचा द्वारा शरीर में प्रविष्ट होते हैं। फ़ीसदी ३ बीमारों को छोड़ बाकी रोगियों में त्वचा द्वारा शरीर में प्रवेश होते देखे गये हैं। शरीर में पहुंच कर यह "लिम्फेटिक" नाम की गिल्टियों में पहुंचते हैं। तब यह गिल्टियां सूज जाती हैं, जिन्हें बद कहते हैं। गिल्टियों में पहुंच ये कीट बढ़ जाते हैं। प्लेग कमीशन ने अपना मत दिया है कि पिस्सू ही रोग की जड़ हैं। प्लेग वाले घर के पिस्सुओं की परीक्षा की गई तो फ़ीसदी ३० पिस्सुओं के पेट में विषैले कीट निकले और साधारण निरोगी घर के देखे बारह गुने पिस्सू मिले। तात्पर्य्य यह है कि विष तो कीटों में है और उनको पेट में भर के फैलाने वाले ये पिस्सू हैं।

आयुर्वेदीय मत भी इस अनुसन्धान से बहुत मिलता है। जन-विध्वंसक सक्रामक, रोग भूमि के विकार से होते हैं। ऐसा पहले कह ही चुके हैं। और ऐसा ही डाक्टरों का मत है। वास्तव में भूमि के विषैले परमाणु जिन्हें वे कीट कहते हैं मरे हुए चूहों द्वारा बढ़ कर पिस्सुओं के जरिये मनुष्यों तक पहुंचते हैं। तात्पर्य यह है कि

भूमि में पैदा हुए विषैले कीट प्लेग के कारण, पिस्सू उनकी सवारी और चूहे उनके पोषक है।

बम्बई में सन् १८९४ ईस्वी के अक्टूबर महीने में हांग कांग (Hong Kong) से सामान से भरा हुआ एक जहाज आया। जिसके किसी पुलन्दे से प्लेग के कीडों और पिस्सुओं से भरे हुए मृत जीवित कई चूहे निकले। लोगों ने इन चूहों को साधारण समझ इधर उधर फेंक दिया। या यों कहिये कि अपने हाथों से भारत के नाश करने वाले बीजों को बोदिया। कुछ ही दिन पीछे उस मुहल्ले में बीमारी फैली और वहां गुप्त रूप से प्लेग के कीट बढने लगे। दो वर्ष में जब इनकी सैना बढ़ गई तो समूची बम्बई पर इन की चढ़ाई हुई। बम्बई को पीडित कर सन् १८९८ में पूना और पीछे कलकत्ते में भी इनका आक्रमण हुआ।

रेल, रोगी, और छूत छात से प्लेग के कीट सम्पूर्ण भारत में व्यापन हो गये चींटी का पहाड़ बनकर इसने भारतमें हाहाकार मचा दिया डाक्टरी में रोगी के लक्षणानुसार कई भेद किये गये हैं जैसे.—

नाम	लक्षण	बचने की सख्या
ग्रान्थिक प्लेग ब्यूबोनिक (Bubonic)	बगल, जघा, और गले में गिल्टियां निकलती हैं।	१०० में से ३०। ३५
आन्त्रिक प्लेग (Intestinal) इन्टेस्टाईनल	इस में आन्तें बिगड़ जातीहैं वमन औरदस्त होते हैं इस का प्रभाव २४ से ३० घंटे में हो जाता है।	" " २०। २५
पार्श्विक प्लेग	इसमें पसलियों में दर्द होता है प्लेग से जल्दी मृत्यु होती है।	" " १५-१६
शारीरिक प्लेग न्यूमोनिक (Numonic)	इसमें फैफडाबिगडजाता है	" " १०-१५

ओन्मादिक प्लेग	इसमें मस्तिष्क में खराबी होती है रोगी बहुत बकता है	१००मेंसे १०-१५
भय जनित प्लेग	इसमें रोगी बिना कारण के केवल भय से ही रोगी हो जाता है।	" " ५०
रक्तज सेप्टी सीमिक (Septicmic)	सम्पूर्ण शरीर का रक्त कीटों के प्रवेश होने से सड़ जाता है इसका असर २-३ घंटे में ही हो जाता बड़ा भयकर है।	" " ४५

प्लेग के रोगी की अवस्थायें

पहिली अवस्था–आरम्भ में शरीर में प्लेग का विष प्रवेश करता है। विष प्रविष्ट होनेपर दो दिनों से सात दिनों पीछे उसका असर होता है यदि विष अधिक प्रविष्ट हुआ हो तो चार घण्टे पीछे ही दूसरी अवस्था आरम्भ हो जाती है।

दूसरी अवस्था में–हाथ पांव ओर शिर में दर्द, चित्त में उद्वेग, और गिलटी निकलने के स्थान में पीड़ा होती है। ज्वर आता है,ज्वर आने पर,भोजन में अरुचि, शरीर में शिथिलता, इन्द्रियों में निर्बलता, थकान, ग्लानि, वमन, कभी पतले दस्त, छाती में दर्द होते हैं। दो दिन यह दशा रहकर गिलटी निकल आती है। कभी २ इन लक्षणों के बिना यकायक १०३ से १०५–१०७ डिगरी तक ज्वर चढ़ आता है नाड़ी अति शीघ्र चल निकलती है। आंखे लाल और फट जाती हैं।

तीसरी अवस्था में–जंघा ग्रीवा अथवा, कांख में कभी गोल कभी लम्बी गांठ निकल आती है। गिलटी में अत्यन्त जलन होती है। बेहोशी होती है। किसी २ के श्वास चलता है ऐसी अवस्था होनेपर २४। २५ घण्टों तक में रोगी मरजाता है। यदि दस्त पतले हों, मूत्र लाल हो, सज्ञानाश, और बेचैनी हो तो अनारोग्यता के लक्षण हैं यदि रोगी को होश हो और वह स्थिर रह आवे, घबड़ाहट कम हो, दस्त ढीलाबन्धा हुआ पीले रंग का हो तो आरोग्य होने की आशा जानना।

चौथी अवस्था-इस अवस्था से आरोग्यता की सूचना होती है, गिलटी पक जाती है तीसरी अवस्था के लक्षणों में कमी और नाड़ी मिनट में ७०-८० बार चलकर मन्द पड़ जाती है।

पांचवीं अवस्था-फोड़ा पक जाता है, बल बढ़ने लगता है। भूक लगती है कान्ति सुधर जाती है यह अवस्था पूर्ण आरोग्य होने की सूचना देती है। इसके बाद एक दो सप्ताह में रोगी आरोग्य हो जाता है।

विशेष-कभी २ बिना व्यवस्था के एक दम प्रचण्ड ज्वर आकर शरीर में गांठ निकल कर या बिना ही गांठ के दो चार घंटे या एक दो दिन में रोगी मरजाता है इससे जाना जाता है कि प्लेग का वेग अनेक प्रकार का है।

प्लेग चिकित्सा

सदाचार

"संक्षेपतः क्रिया योग निदानं परिवर्जनम्" अर्थात् जिस कारण से रोग पैदा हुआ हो चिकित्सा करते समय पहले उसे ही दूर करना चाहिये। महर्षि आत्रेय के वचनानुसार प्लेग के समान संक्रामक रोगों का सबसे पहला कारण "अधर्म" है। और उसको दूर करके सदाचार का पालन करना ही सबसे उत्तम उपाय है। परन्तु आज के भारतवासी धार्म्मिक बातों की ओर ध्यान नहीं देते हैं "अपनी २ ढपली और अपना २ राग" अलापते हैं। उन्नति करने का गीत चारों ओर गाया जाता है। पश्चिमीय शिक्षा पारङ्गत बाबू लोग शिर तोड़ परिश्रम करते हैं परन्तु उनके उपाय "धार्म्मिक मीमांसा" को छोड़कर निराले ही होते हैं प्राचीन ऋषि महर्षियोंने धर्म्म को संसार की सब ही बातों में मिला दिया है। प्रातःकाल से उठकर रात्रि में सोते समय तक हम जो कुछ करते हैं धर्म्म की कसौटी उन सब के साथ है। इस ही नियम को लेकर स्वास्थ्य की रक्षा करने वाली अनेक क्रियायें धर्म्मके रंग में रङ्गकर हमारे लिये बना दी गई थीं धर्म्म प्राण भारतवासी उनको नित्यकर्म्म समझ पालन करते थे। किन्तु इस समय वे वाहियात या ढकोसला समझी

जाती हैं। रोग दो प्रकार के होते हैं शरीरिक और मानसिक-सदाचार और धार्मिक नियमों का पालन करते रहने से मन बुद्धि शुद्ध रहते हैं। जिससे प्रजापराध नहीं होता, जिस देश के मनुष्य सदाचारी होते हैं और अपना जीवन धार्मिक नियमों को पालन करते हुए विताते हैं वहां प्लेग के समान अनिष्ट कोटी रोग हो ही नहीं सकता। इस से भारतवासियो! प्राचीन ऋषियों के उपदेशों को बुरी निगाहों से मत देखो। यथा साध्य उनको पालन करो —

महर्षि आत्रेय कहते हैं

सत्यं भूतेदया दानं वलयो देवतार्चनम्
सद्वृत्तस्यनुवृत्तिश्च, प्रशमो गुप्तिरात्मनः
हितं जनपदानांच शिवानामुपसेवनम्
सेवनं ब्रह्मचर्य्यस्य तथैव ब्रह्मचारिणाम्
धार्म्मिके सात्विकैर्नित्यं सहास्या वृद्धि सम्मतैः
इत्येदभेपजं प्रोक्तमायुषः परिपालनम् ॥

भावार्थ—सत्य बोलना, प्राणियों पर दया करना पात्रों को दान देना, देवताओं का पूजन, यज्ञकरना, अच्छे पुरुषों का अनुकरण करना, शान्त रहना, आत्मा की रक्षा करना, ससार का हित सोचना, कल्याणकारक बातों को ग्रहण करना, ब्रह्मचारी रहना, ब्रह्मचारियों का सत्कार करना, वृद्ध पुरुषों के सम्मत, धार्मिक सात्विक भावों को स्वीकार करना, इस प्रकार की औषधि आयु की रक्षा करनेवाली है।

आत्रेय ऋषि का उपदेश बड़ा महत्वपूर्ण है। जब तक भारत वासी पूर्वजों की कीर्ति को अध्यात्म ज्ञान से चिरस्थाई न रक्खेंगे, कभी सुखी नहीं रहसकते। भारतवासियों के सात्विक भाव नष्ट होगये हैं। मानसिक बल क्षीण होगया है, पश्चिमीय शिक्षा के प्रचार से पुरानी बातों में श्रद्धा नहीं रही है इससे भारत का प्रतिदिन अध पतन होरहा है। जबतक भगवान श्रीकृष्ण के "यतो धर्मस्ततोजय." इस वाक्य में श्रद्धा, विश्वास, अनुराग न होंगे भारत का कभी कल्याण न होगा।

चार कारणों की निवृत्ति

प्लेग के सदृश संक्रामक रोगों के चार कारण पहले लिख चुके हैं। संक्रामक रोग का सन्देह होते ही पूर्वोक्त चार कारणों की ओर ध्यान हो और सम्पूर्ण नगरवासी मिलकर इनको शुद्ध करने के लिये एक साथ प्रयत्न करो। यदि ये चारों ही विगड़े हों और भूमि और वायु में विषपरमाणु अधिक मिले हों तो जहां तक हो सके उस स्थान को त्याग कर दूसरी जगह जहां कि रोग न हो जा बसो। क्योंकि जब वायु और जलके साथ देश और काल विगड़ जाते हैं तब उन से अपनी और अपने परिवार की रक्षा करना बड़ा कठिन काम है। पहले ग्रन्थों में महामारी के समय स्थान त्याग करना समुचित उपाय बताया है। भूमि से निकले हुए विष परमाणुओं से रक्षित रहना दु साध्य काम है। बहुत से आदमी स्थान छोड़ने में अपनी अप्रतिष्ठा और डरपोकपन समझ उसे नहीं छोड़ते वे पीछे अपने परिवार का नाश देखकर पछताते हैं और स्वय भी अकाल मृत्यु के ग्रास होते हैं॥

आज कल भारतवासी अपनी आरोग्यता के लिये शुद्ध वायु, जल और स्थान का प्रबन्ध करना नहीं जानते या झंझट के कारण नहीं करते—यह उन की भूल है हम इन की शुद्धि के लिये शास्त्रीय उपाय लिखते हैं यदि पाठक ध्यान देंगे और सम्पूर्ण नगरवासी मिलकर इन उपायों की योजना करेंगे तो प्लेग के समान रोगों का प्रादुर्भाव न होगा—या जल्दी शान्त हो जायेंगे॥

हवा।

हवा क्यों बिगड़ती है पहले इस बात पर ध्यान देना चाहिये। वायु को पवन कहते हैं। पवन शब्द का अर्थ पवित्र करने वाला है। पवन के परमाणु स्वय नहीं बिगड़ते किन्तु जब दूसरे पदार्थों के विकृत परिमाणु इस में मिल जायें, तब उसे बिगड़ी हुई हवा कहते हैं। छोटे २ मकानों की हवा, बहुत से मनुष्यों के सांस लेनेसे, मल मूत्र त्यागने के लिये ठीक स्थान पर पाखाना न होने से, मोरी के सड़े दुर्गन्धित पानी के भरे रहने से, घरों में पशुओं के बांधने से,

संकुचित गलियों में बने हुए कम ऊंचे मकानों में रोशनी तथा बाहरी ऊपरी शुद्ध हवा के न घुसने से, कूड़ा करकट आदि साफ न करने से खराब हो जाती है।

छोटे २ गांव या शहरों की हवा उपर्युक्त कारणों से या ऋतुओं की प्रतिकूलता से (जैसे मकानों की चारों ओर जल भरा रहना मकानों में नमी रहना) बिगड़ जाती है॥

बिगड़ी हुई हवा को शुद्ध करने वाली ऊपरी बहती हुई शुद्ध हवा है जिस स्थान की हवा खराब हो जावे, वहां उसके निकलने का प्रबन्ध कर दूसरी शुद्ध हवा के भर देने से ही वह शुद्ध हो जाती है। और यह ही वायु को शुद्ध करने का सरल उपाय है॥

जब बहुत दूर की हवा में विषेले परमाणु मिल जावें तब नगर वासी अपने २ मकानों की सफाई करके, तथा मकानों में शुद्ध हवा के आने का प्रबन्ध करके पीछे सब मिल कर निम्नलिखित प्राचीन और, देशी उपायों को करें इन उपायों से अवश्य लाभ होगा—

हवा को विष रहित करने वाले

प्राचीन शास्त्रीय उपाय।

सुश्रुत के कल्पस्थान में कहा है कि युद्ध के समय राजा लोग प्रतिपक्षी को हानि पहुंचाने के लिये, जल, वायु, भूमि, तृण आदि में विष मिला देते हैं। इससे इनके विषले परमाणुओं को अनायास दूर करने के उपाय लिखते हैं। हम उन उपायों को प्लेग के समय भूमि जलादिकों के विष परमाणुओं को नाश करने के लिये काम में लाने की सम्मति देते हैं उपाय बहुत अच्छा है हमारी गवर्नमेंट, देशके नेता, और प्रधान पुरुषों को उनका व्यवहार कर परीक्षा करनी चाहिये।

सुश्रुतोक्त प्रयोगः—

(१) चांदी का बुरादा, पारा, वीरबहुटी, सिंदरफ इनको कपिला के पित्ते में घोटकर बाजों पर लेप कर बजवावे, इनसे शब्द द्वारा विष परमाणु नष्ट होते हैं।

(२) दालचड़, रेनुका, त्रिफला, सहजना, मंजीठ, मुलेहटी, पद्माख, वायविडंग, तालीसपत्र, नाकुली, इलायची छोटी, तज, तेजपात,

चन्दन, मारङ्गी, पटोलपत्र, श्रावाभारा, पाटा, महुदेई, इन्द्रायण, गूगल, निसोथ, अशोक, सुपारी, तुलसी, मिलावे इनको मोर, शूकर गोह, बिलाव, शाथर, न्योला, इनके पित्तों में घोट कर और शहद मिलाकर नक़ारे, दुदभी, भेरी आदि पर लेप करके बजवावे। ध्वजाओं पर लेप करे। इन औषधियों के परमाणु विषयुक्त वातादिकों को शुद्ध कर देते हैं।

हवन और धूनी—पहले समय में देश में यज्ञों का प्रचार था उनके द्वारा हवा के दूषित परमाणु नष्ट होते थे, अब नये समय में नई २ बातें चल रही हैं। यदि संक्रामक रोगों के समय, या प्रतिवर्ष (जैसे होली में सार्वजनिक यज्ञ) विधियुक्त सार्वजनिक यज्ञ हुआ करें तो हमारा कष्ट बहुत कम होजाय।

धूनी-लाख, हल्दी, अतीस, हरड का बकुल, मोथा, रेणुका, इलायची छोटी, तेजपात, दालचीनी, कूट, प्रयगु इन चीजों की धूनी बना कर जलाने से वायु के विष परमाणु दूर होते हैं। प्रत्येक घर और प्रधान २ स्थानों पर इस धूनी को जलाना चाहिये।

दूसरी सुगंधित वायु शोधक धूनी—या हवन

कपूर, सरलधूप, शिलारस, जायफल, जावित्री, लौंग, छोटी इलायची, तज, तेजपात, दालचीनी, नागकेशर, सुगन्धवाला, खस, सुगन्ध कोकिला, सुगन्धकामिनी, सुगन्ध मन्त्री, वालछड़, कचूर, तालीशपत्र, कंकोलमिर्च, पानडी, इतनी दवाइयां छटांक २ भर बड़ी इलायची, मोथा, आध आध पाव, अगर, तगर पद्माक्ष, काली मिर्च, इसबंद पाव पावसेर, छारछबीला, लोहबान आध २ सेर सुफेद चंदन, लाल चदन, एक २ सेर गूगल दो सेर, केसर दो तोला इन सब को कूट पीस कर इन सब से दूने तिल, जौ, चांवल, तथा सबका आधा घी, और शक्कर मिला कर शाकल्य बनावे, आम ढाक, देवदार या गोवर के कण्डों से नित्य प्रति हवन करना चाहिये, मनस्थाई कुंड में हवन करना चाहिये, और वह कुंड बारी २ घर के हर एक कमरे और कोठरी में रखकर दरवाजा बन्द कर देना चाहिये, जिस से उसका पवित्र धूम उस कमरे या कोठरी के प्रत्येक भाग में प्रवेश करके उसे सब प्रकार परिशोधित करदे। नगरवासियों का मिल

कर अपने २ गांव के प्रधान २ स्थानों में अधिक शाकल्य से उस हवन को कराना चाहिये। जो लोग हिन्दू धर्म को नहीं मानते वे इसे योंही आगपर जलावें इससे प्लेग के समय बड़ा लाभ होता है। (प० मन्नूलालजी मिश्र कानपुर का विशेष अनुभूत)

जल

आरोग्यता के लिये जैसे शुद्ध वायु की आवश्यकता है वैसे ही जलकी। प्लेगके समय शुद्ध जल का पीना, तथा जलाशयों की शुद्धि करना बडा आवश्यक है। जल को साफ करने के लिये उसे औटा लेना ही साधारण उपाय है। तालाव और कूपों के जल में उसे शुद्ध करने के लिये मछलियां और मेंडकों का डाल देना बहुत अच्छा है। प्लेग के समय, कूओं के पानी खिचवाकर उनमें फिटकरी, सज्जीखार, और चूना डाल देना चाहिये। तथा तालाव, झील, नदी, नाले का पानी औटा कर पीना चाहिये। तिपाई और कोयलों द्वारा भी जल अच्छा साफ होजाता है। जब जल में भारीपन अधिक हो तो पानी भरे घडों में थोडा २ कलई का चूना डालो और दो घण्टे पीछे नितार कर दूसरे बरतन में भरकर काम में लावें।

जल शोधने के लिये सुश्रुत में लिखी हुई नीचे की भस्म अत्यन्त लाभदायक है। प्रत्येक गृहस्थ को इसे बनाकर रख लेना चाहिये।

धाय, अश्वकर्ण, बिजेसार, फरहद, पाटला, सिन्दुवार, मैमडी, मोरवा, अमलतास, खैरसुफद, इनमें से जितनी मिले उन्हेंही जलाकर भस्म करले पीछे उस भस्म को कूप, वा सरोवर में डाले या एक अञ्जलीभर भस्म पानी से भरे हुए घडे में डालदे जब भस्म नीचे बैठ जावे तब उसे ऊपर से नितार छानकर पीवे।

स्थान और भूमि।

प्लेग भूमिज विकार से पैदा होताहै और प्लेग के समय स्थान का त्याग देनाही सर्वोत्तम उपाय है। क्योंकि भूमिको निर्विष करना बड़ा कठिन काम है। यदि किसी कारण से ऐसा न किया जासके तो भूमि के प्लेग के परमाणुओं को दमन करने के लिये इन उपायों को काम में लावे।

(१) मकान को साफ करा के उस के कूड़े करकट को बाहर फिकवावे, मूसों के भिटों को पक्की ईटों से बन्द करदे, जिनकोठरियों में नमी रहती हो, रोशनी न पहुंचती हो या जो रात्रि में सोनेका स्थान हो-उनकी भूमि को दो दो फुट खुदवा कर उसमें बिना बुझा चूना भरवादे और प्रति सप्ताह चूने को बदल दे। मकान को चूने से पुतवादे। प्रतिदिन मकान में, नीम की पत्ती, गंधक, लोहवान की धूनी देवे। एक बड़े पात्र में चूना नोसादर और पानी भरकर रखदे और दो चार दिन बाद बदल दिया करे। मकान की दीवारों पर खड़िया पानी में घुलवाय उस से छिड़काव करादे, रात्रि को, गंधक, गूगल, मोरपंख, सांपकी कांचली, लोहवान, नीम की पत्ती इनकी धूनी देवे चंदन, लोहवान,कपूर सूखा अलकतरा नीम की पत्ती इनकी धूनी दे जवासे की जड़, तज, तेजपात, इलायची, नागकेशर, कपूर, कंकोल, मिर्च, अगर, केसर, लौंग इन्हें शराब में मिलाकर पृथ्वीपर छिड़काव करे (यह प्रयोग सुश्रुतमत का है और भूमिज विषनाशार्थ वर्णित है) अथवा बांबी की मिट्टी पानी में मिलाकर छिड़काव करे। कारबोलिक एसिड को ८० गुने पानी में मिलाकर भूमि पर छिड़के। मलमूत्रादिकों के स्थानों को नित्य साफ कराकर, हीराकसीस २० तोला, सुहागा १० तोला करेसनसवलावमेंट ६ माशा इनको २॥ सेर पानी में मिला उन से धुलवादे। मकान के पास यदि कूड़ा करकट होतो उसे साफ करादे नीम के तेल का दीपक जलाया करे।

प्लेग से बचने के लिये साधारण नियम

शरीर को अधिक स्वच्छ रक्खे प्रतिदिन ईश्वराराधन, देवार्चन, और हवन किया करे शौचाचार और खान पान में विचार करे। प्लेग के स्थानों और रोगियों के पास न जावे। यदि जावे तो आकर कपड़े बदले। मकान की ऊपरी मंजिलों पर चारपाई पर सोवे चलते समय मोज़े सहित जूता पहने रहे। मरते हुए रोगियों को देख घबड़ावे नहीं। भुज दंड से कपूर बांधता रहे। गरमागरम और हलका खाना खावे, ताजा या औटा हुआ पानी पीवे, तुलसी की चाय बना कर दोनों समय पीता रहे। साफ और मोटे वस्त्र पहने रात्रि को भर नींद सोया करे। नीम की पत्ती, तुलसी, काली मिर्च इन को पीसकर माशे माशे भर की गोली बनाकर रखले और सबेरे

कुटुम्ब भर के मनुष्यों को एक २ गोली खिला दिया करें और बच्चों को आधी गोली दें। इसी प्रकार, आक के फूल की लौंग, काली मिरच, अदरख, पीपल लौंग, पांचों नौन इनको समान भाग लेपीस कर झरबेर के बराबर गोली बनाकर सेवन करे-कराये। घी, खांड, तिल, जौ, पीली सरसों, कपूरकचरी, जमालगोटा, गिलोय, नीम की पत्ती इन की धूनी मकान में दे दिया करे। औंगा के बीज, सिरस के बीज, मकोय, इन को गौमूत्र में पीसकर उस से तेल पकावे। इस को शरीर से मालिश कर के गरम जल से स्नान किया करे— गंधक और निम्ब दोनों कृमिघ्न हैं इन का सेवन प्लेग और मैले-रिया के समय बहुत उपयोगी है नीम के पत्तों को पीसकर गुनगुना करके पीवे। इसी तरह शुद्ध गन्धक का सेवन करना भी बहुत लाभ दायक है गन्धिक रसायन यदि सेवन की जावे तो और भी अच्छा हो-गन्धिक रसायन का एक प्रयोग-शुद्ध गन्धक में गाय का दुग्ध, दाल चीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, गिलोय, त्रिफला, सोंठ भांगरा, और अदरख, के रस या काथ की आठ २ भावना देवे। यह रसायन आविष नाशक है। मात्रा एक माशे की।

नीम के तेल की शरीर पर मालिश करना, तलवों से, नीम का तेल, या सरसों का तेल लगाना नीम सोप लगा कर स्नान करना, प्लेग के समय बहुतही लाभदायक है। टिंचर आयोडीन की एक बूंद छटांक भर पानी में मिलाकर सवेरे व शाम को पीने से प्लेग के आक्रमण से बड़ी रक्षा होती है, इससे प्लेग के बीज नष्ट हो जाते हैं।

भारतवासी पहिले से अपने शरीर की रक्षा नहीं करते जब रोग घेर लेता है तब घबड़ाते फिरते हैं आग लगने पर कूआ खोदने के समान फिर कुछ नहीं होता इससे पहिले ही से सावधान होकर उपर्युक्त उपायों की योजना करे।

प्लेग और टीका।

"प्लेग का प्रादुर्भाव न हो" और मनुष्य के ऊपर इसका प्रभाव न हो इसके लिये किसी अमोघ उपाय की ढूंढ खोज करने के लिये विद्वान डाक्टरों ने बड़ा शिर खप्पी किया। किन्तु तो भी अभी तक कोई टिकाऊ उपाय नहीं निकला। किसी ने चूहों का बीज नाश

करना, किसी ने सफाई करना, किसी ने बिल्ली पालना, किसी ने मकान छोड़ना आदि उपाय बताये किन्तु उनसे प्लेग के नाश में सर्वांश सफलता न हुई। अन्तमें डाक्टर 'हाफकिन' के प्लेग के टीके का लगाना अन्य उपायोंसे बढ़िया सिद्ध किया गया। इसके सम्बन्ध में राजाधिराज पञ्चम जार्ज से ले कर बड़े २ लार्ड, और डाक्टरों ने अपनी सम्मति दी है। किन्तु इसके विपक्ष में अनेक डाक्टर हैं। और उनका कथन भी प्रामाणिक है। टीके लगाने में जो आपत्तियां हैं उनकी ओर भी ध्यान देना चाहिये।

(१) टीका लगा कर स्वस्थ मनुष्य के शरीर में विष प्रवेश किया जाता है जिसके ऊपर प्लेग का विष असर न कर सके। विष प्रविष्ट होने से मनुष्य के रक्त और प्रकृति पर बड़ा बुरा असर पड़ता है।

(२) टीका लगाने से ज्वर चढ़ता है, वह कमजोर आदमी को सहन नहीं हो सकता। टीके के ज्वर से कोई २ आदमी मर भी जाता है।

(३) हर छठे महीने टीका लगवाना पड़ता है।

(४) टीका लगवाने के पीछे भी मनुष्य प्लेग से निर्भय नहीं हो सकता। क्योंकि टीका लगाए हुए पुरुषों को भी प्लेग हो जाता है।

(५) टीका लगाने पर शरीर निर्बल हो जाता है और वह निर्बलता बहुत दिनों तक रहती है।

टीके के सम्बन्ध में हम भी इस मत से सहमत हैं कि टीके के प्रचार से प्लेग के केसों की संख्या कम हो जाने पर भी अन्य आपत्तियां खड़ी होती हैं। टीके से मनुष्य की पूरी २ रक्षा नहीं हो सकती। टीका लगाये हुए मनुष्य को विश्वास पूर्वक किसी प्लेग से मरे घर में छोड़ नहीं सकते।

क्योंकि जब पञ्जाब प्रान्त में टीका लगाया गया तब एक दम १६ आदमी मर गये। मारवाड़ के कुचली स्थान में दो बार टीका लगाये हुए भी ३५ मनुष्य मरे। ऐसी अवस्था में टीका लगवाना न लगवाना बराबर ही है।

साधारण उपचार

जब किसी आदमी को प्लेग का ज्वर मालूम हो तो उसे ऐसी जगह पर जहां प्लेग न हो ले जावे, रोगी के ओढ़ने बिछाने और पहरने के कपड़े साफ होने चाहियें। मकान में भी सफाई का और रोशनी का इन्तजाम हो। रोगी के सामने घबड़ाना नहीं चाहिये प्रत्युत रोगी को धैर्य्य दे। रोगी के पास अधिक आदमियों का रहना अच्छा नहीं केवल एक दो मनुष्य सेवा शुश्रूषा के लिये नियत किये जावें।

ज्वर आते ही रोगी को लंघन करादे, और पीने के लिये अधौटा गरम जल दे, यदि नीमके पत्तों को ओटाकर अथवा पित्त की अधिकता में नीम की छालको जलाकर और उसे बुझाकर पानी पिलाया जावे तो बड़ा लाभकारी है। किसी अच्छे वैद्य या डाक्टर के हाथ से रोगी की चिकित्सा करावे। रोगी के मल, मूत्र, और कफ को होशियारी से बाहर फिकवादे, रोगी के पास पड़े न रहने दे।

रोगी के लक्षण देखकर पहले इस बातका निश्चय करे कि रोगी को किस दोष की अर्थात् सर्दी, गर्मी, या कफ किस की अधिकता है। और तदनुसार ही चिकित्सा प्रारम्भ करे।

गिल्टी की दवाइयां

प्लेग वाले के अक्सर गिलटी निकलती है, गिल्टी छोटी मटर से लेकर आलू के बराबर तक होती है, रान, कान की जड़, बगल, गला, पसली, सीना, और अन्यसन्धि स्थानों में निकलती है। कान की जड़ और सीने की गिल्टी बहुत भयदायक है। गिलटियों के लिये नीचे लिखे प्रयोग बहुत लाभकारी हैं।

(१) ईंट, पत्थर, या लोह खण्ड, या कांच को गरम करके उस से गिल्टी की इतनी सिकाई करे जिससे उसकी त्वचा झुलस जावे पीछे उस पर नीम के पत्ते की टिकिया गरम करके बांधे।

(२) जोंक या सींगी लगाकर खून को बाहर निकाले और नीम के पत्तों का भरता ऊपर से बांधे।

(३) चित्रक की गीली छाल या न मिलने पर सूखी ही पानी में पीस खूब गरम करके गिल्टी पर बांधे और दो २ घण्टे बाद टिकिया बदल दिया करे इससे गिल्टी पर छाले पड जावे तब उनका पानी निकाल कर नीम के पत्तों की टिकिया बांधे।

(४) गिल्टी को फोड़ने के लिये "पापड़ाखार" को थोड़े से पानी में घोल उसका फाहा गिल्टी पर रखदे इससे गिल्टी बहुत जल्दी गल जाती है और पकी हो तो फूट जाती है।

(५) शहद, चूना, आंबाहल्दी, ग्वारपाठा, निर्विषी और आक का दूध इनको पीस कर गरम करके गिल्टी पर लेप करे और ऊपर से आक के पत्ते गरम करके बांधदे, ऊपर से ईंट की सिकाई करे। इस से गिल्टी बैठ जाती है या पक निकलती है।

(६) तेज चाकू या नश्तर से फूली हुई गांठ को एक इंच चौड़ी और पौन इंच गहरी चीर कर उसके दूषित रुधिर और पीयको खूब निचोड़ कर बाहर निकाल दे और ऊपर से नीम के पत्तों की टिकिया या चूर्ण बांध दे।

(७) शिरस के बीज, हल्दी, केशर, गिलोइ इनको पीस गरम करके लेप करे।

(८) निरविषी, कुचला, संखिया, कपूर हल्दी इनको ग्वारपाठे के रस में पीस, फिर ग्वार पाठे के टुकड़े पर रख गरम करके बांधदे

(९) हल्दी तोले २) जमालगोटा माशे ६, कुचला ६ माशे इनको कूट कर नीम का तेल मिलाय कर पुलटिस बनावे, गिल्टी को सेक कर पीछे इसे बांध दे।

(१०) नागफनी, थूहर का गूदा, अफीम, केसर, निर्विषी इनको
तो० २) माशे ३ माशे १ माशे १
पानी में पीस गरम करके लगावे ऊपर से अरण्ड का पत्ता गरम कर के बांध देवे।

साधारण उपचार

जब किसी आदमी को प्लेग का ज्वर मालूम हो तो उसे ऐसी जगह पर जहा प्लेग न हो ले जावे, रोगी के ओढ़ने बिछाने और पहरने के कपडे साफ होने चाहियें। मकान में भी सफाई का और रोशनी का इन्तजाम हो। रोगी के सामने घबडाना नहीं चाहिये प्रत्युत रोगी को धैर्य्य दे। रोगी के पास अधिक आदमियों का रहना अच्छा नहीं केवल एक दो मनुष्य सेवा शुश्रूषा के लिये नियत किये जावें।

ज्वर आते ही रोगी को लघन करादे, और पीने के लिये अधौटा गरम जल दे, यदि नीमके पत्तों को औटाकर अथवा पित्त की अधिकता में नीम की छालको जलाकर और उसे बुझाकर पानी पिलाया जावे तो बडा लाभकारी है। किसी अच्छे वैद्य या डाक्टर के हाथ से रोगी की चिकित्सा करावे। रोगी के मल, मूत्र, और कफ को होशियारी से बाहर फिकवादे, रोगी के पास पडे न रहने दे।

रोगी के लक्षण देखकर पहले इस बातका निश्चय करे कि रोगी को किस दोष की अर्थात् सर्दी, गर्मी, या कफ किस की अधिकता है। और तदनुसार ही चिकित्सा प्रारम्भ करे।

गिल्टी की दवाइयां

प्लेग वाले के अक्सर गिलटी निकलती है, गिलटी छोटी मटर से लेकर आलू के बराबर तक होती है, रान, कान की जड, बगल, गला, पसली, सीना, और अन्यसन्धि स्थानों में निकलती है। कान की जड और सीने की गिल्टी बहुत भयदायक है। गिलटियों के लिये नीचे लिखे प्रयोग बहुत लाभकारी हैं।

(१) ईंट, पत्थर, या लोह खण्ड, या काच को गरम करके उस से गिल्टी की इतनी सिफाई करे जिससे उसकी त्वचा झुलस जावे पीछे उस पर नीम के पत्ते की टिकिया गरम करके बांधे।

(२) जोंक या सींगी लगाकर खून को बाहर निकाले और नीम के पत्तों का भरता ऊपर से बांधे।

(३) चित्रक की गीली छाल या न मिलने पर सूखी ही पानी में पीस खूब गरम करके गिल्टी पर बांधे और दो २ घण्टे बाद टिकिया बदल दिया करे इससे गिल्टी पर छाले पड़ जावे तब उनका पानी निकाल कर नीम के पत्तों की टिकिया बांधे।

(४) गिल्टी को फोड़ने के लिये "पापड़ाखार" को थोड़े से पानी में घोल उसका फाहा गिल्टी पर रखदे इससे गिल्टी बहुत जल्दी गल जाती है और पकी हो तो फूट जाती है।

(५) शहद, चूना, आंबाहल्दी, ग्वारपाठा, निर्विषी और आक का दूध इनको पीस कर गरम करके गिल्टी पर लेप करे और ऊपर से आक के पत्ते गरम करके बांधदे, ऊपर से ईंट की सिकाई करे। इस से गिल्टी बैठ जाती है या पक निकलती है।

(६) तेज चाकू या नश्तर से फूली हुई गांठ को एक इंच चौड़ी और पौन इंच गहरी चीर कर उसके दूषित रुधिर और पीवको खूब निचोड़ कर बाहर निकाल दे और ऊपर से नीम के पत्तों की टिकिया या चूर्ण बांध दे।

(७) शिरस के बीज, हल्दी, केशर, गिलोइ इनको पीस गरम करके लेप करे।

(८) निरविषी, कुचला, सखिया, कपूर हल्दी इनको ग्वारपाठे के रस में पीस, फिर ग्वार पाठे के टुकड़े पर रख गरम करके बांधदे

(९) हल्दी तोले २) जमालगोटा माशे ६, कुचला ६ माशे इनको कूट कर नीम का तेल मिलाय कर पुलटिस बनावे, गिल्टी को सेक कर पीछे इसे बांध दे।

(१०) नागफनी, धूहर का गूदा, अफीम, केसर, निर्विषी इनको
तो० २) माशे ३ माशे ? माशे १
पानी में पीस गरम करके लगावे ऊपर से अरण्ड का पत्ता गरम कर के बांध देवे।

से तो कूट कर मिलावे और फिर मुंह बन्द करके जब तक फेन उठ न आवे तब तक रखा रहने दे। पीछे सुरा खींचले। इस सुरा को मद्य विभाग से थाड़ा लेकर पहले से तय्यार करके रक्खे। दो २ तीन २ तोले, दो २ घंटे पर पिलाता रहे। यह प्रयोग बड़ा लाभदायक है। ज्वर को शांति करता है। रोगी को निर्बलता नहीं होती। बेचैनी सन्निपात, प्रलाप, आदि दूर होते हैं।

मृगमदासव—मृतसञ्जीवनी सुरा १२॥ सेर, शहद ४॥ सेर, पानी ६। सेर, कस्तूरी १६ तोले, मिरच, लौंग, जायफल, पीपल छोटी, दाल चीनी ये औषधियां आठ २ तोले इनको कांचके बर्तन में मुह बंद करके रक्खे पीछे साफ कर के रक्खे; इस आसव को जब प्लेग में शीतांग कफ की अधिकता, पार्श्वशूल, श्वास, कास, तन्द्रा, मूर्च्छा फेफड़े का शोथ हो तब काम में लावे, मात्रा एक माशे की है। विशूचिका, हिचकी में भी बड़ा लाभ देता है।

अर्क पुष्पादिवटी—आक के फूल की लौंग, काली मिरच, अदरख लौंग, पीपल छोटी पांचों नौन ये सब बराबर लेकर पीस कर झरबेर के समान गोलियां बनावे अष्टावशेष जल के साथ दे दिन में तीन बार।

अजितागद—बाइबिडंग, पाठा, त्रिफला, अजमोद, हींग, तगर, त्रिकुटा, पांचों नौन, चित्रक इन सब को महीन पीस कर शहद मिलाय कर गौ के सींग में भरदे, और ऊपर से गौ का सींग ढक कर पन्द्रह दिन धरा रहने देवे। फिर निकाल कर दो २ माशे, दिन में कई बार देवे। इससे स्थावर और जंगम सब प्रकार का विष दूर होता है, मूर्च्छा, बेचैनी सन्निपात, दूर होते हैं।

महागद—निशोथ, इन्द्रायण, मुलेहटी, हल्दी दोनों, मजीठ, अमलतास का गूदा, पांचों नौन, त्रिकुटा इन को पीस शहद मिला कर

सींग में भर कर पूर्वोक्त प्रयोग के समान तंय्यार करले, मात्रा
वाले को इससे भी प्लेग का विष दूर होता है रुधिर शुद्ध
होता है।

संजीवनागद—लाख, रेनुका, खस, प्रियंगु, सहजना, मुलेठी,
इलायची, हल्दी इन को पीस कर शहद और घृत मिलाकर गौ
सींग में भर के रक्खे, इस का भी प्रयोग पूर्वोक्त अगदों के समान
है। यह अगद भी विष नाशक है।

त्रिपुर भैरव रस—शुद्ध सींगिया १ भाग, सोंठ २ भाग, पीपल
छोटी ३ भाग, कालीमिरच ४ भाग, ताम्रभस्म ५ भाग हिंगुल ६ भाग
इन को अदरख के रस में खरल करे मटर के बराबर गोली बनावे।
इन गोलियों को चार २ घंटे बाद दे इससे कफ वाताधिक्य प्लेग में
लाभ पहुंचता है। फेफड़ों का शूल, श्वास, खांसी, सन्धिशूल दूर
होते हैं।

महासिन्दूर—पारद, रसकपूर नौ २ तोले गंधिक साढ़े पांच तोले,
नौसादर साढ़े चार तोले। इन को पीस कज्जली कर आतिशी शीशी
में भर उस शीशी का मुंह बन्दकर तथा कपरौटी कर ३ दिन बालु-
का यन्त्र में मन्द, मध्यम, तीव्र अग्नि दे। रस सिन्दूर के समान
तय्यार करे। यह महासिन्दूर जिस प्लेग वाले को शीत की अधि-
कता हो, कफ बढ़ रहा हो। नाड़ी की गति शिथिल हो गई हो उसे
बड़ा लाभ पहुंचाता है। मात्रा रत्ती का आठवां भाग, अदरख के
रस के साथ देवे। इस प्रयोग को सावधानी से काम में लाना
चाहिये।

नोट—सुश्रुत के कल्प स्थान में विष नाशक, अनेक अगद लिखे
हैं। वैद्यों को इनकी परीक्षा प्लेग रोग में अवश्य करना चाहिये।
हर एक प्रकार की प्लेग में इससे लाभ पहुंचेगा।

सावधानी—प्लेग शीघ्र प्राण घातक है इससे इसके दोषों को ठीक करने के लिये भी जल्दी होनी चाहिये। पूर्वोक्त प्रयोग यदि मृतसञ्जीवनी सुरा के साथ दिये जावें तो इनका बहुत जल्दी प्रभाव हो। (मद्य विशेष के साथ दिये प्रयोग बहुत जल्दी प्रभाव दिखाते हैं।)

पित्तप्रधान प्लेग—जिस प्लेग में दस्त होते हैं, दाह हो बुखार के साथ रुधिर की लालिमा आती हो। वहां दस्तों की भरमार करना अच्छा नहीं है और न अधिक सर्द दवा देकर वात और कफ को बढ़ा देना ही अच्छा है। सहसा दस्तों का रोक देना भी ठीक नहीं। इससे निम्न लिखित प्रयोगों का सावधानी से उपयोग करे।

किरता सप्तक—चिरायता, मोथा, गिलोय, सोंठ, नेत्रबाला, कमलगट्टा की मिंगी इन सब को समान भाग लेकर दो तोले पावभर जल में औटावे जब छटांक भर रहे तब छान कर पूर्व कथित तुलस्यादि या निम्बादि वटी के ऊपर पिलावे।

पञ्चमूलादि क्वाथ—पञ्चमूल (लघु) खिरेंटी, बेलगिरी, गिलोय, मोथा, सोंठ, पाढ़ा, चिरायता, नेत्रबाला, कुड़ा की छाल, इन्द्र जौ, इन का क्वाथ बना कर पीवे:—

रुधिर बन्द करने को—गूलर का स्वरस, लाख और शहद (२) मुलेहटी, महुआ, फालसे, नेत्रबाला, लालचंदन, तेजपात, देवदारु, खंभारी इनका क्वाथ मिश्री मिला कर पिलावे।

(३) दोहिपतृण (गंदेल घास) धनियां, जवासा, अडूसे की जड़, पित्तपापड़ा, प्रयंगू कुटकी इनके क्वाथ में मिला कर पिलावे।

दस्त बन्द करने को—कस्तूरी भैरव (नीचे लिखा) बेलगिरी, और जीरे के साथ देवे।

कफ प्रधान प्लेग—जिस प्लेग में कफ का ज़ोर हो फैफड़ों में दर्द और श्वास चले, शरीर में ठंडापन हो, श्वास में रुकावट हो उस समय नीचे लिखे प्रयोग काम में लावे।

कस्तूरी भैरव—(सन्निपात के लिये यह प्रयोग बड़ा प्रसिद्ध है वैद्यों को इसे बना कर रखना चाहिये) कस्तूरी, कपूर, ताम्रभस, धाय के फूल, चांदी की भस, सौने की भस, मोती व मूगा की भस, लौह, पाठा, बाइबिडंग, मोथा, सोंठ, नेत्रवाला हरिताल भस, अभ्रक भस, आंवले, इनको आक के पत्तों के रस में घोट कर मटर के बराबर गोली बनाले, चार २ घंटे बाद एक २ गोली दे।

कस्तूरी भूषण—रस सिन्दूर अभ्रक, सुहागा, सोंठ, कस्तूरी, पीपल छोटी, दातुन, भांग के बीज, कपूर, मिरच, इनको समान भाग ले अदरख के रस में घोटे। मटर बराबर गोली बनाये।

फैफड़ों के शोथ को—अलसी को पीस गरम करके पलस्तर चढ़ावे, (२) ग्वार पाठे के रस में अलसी का चून, आमाहल्दी, अफीम, केशर, मीठा तैल, इनकी पुलटिस बना कर सिकाई करे, (३) तारपीन का तैल, मोम का तैल, की मालिश करके सिकाई करे ऊपर से गरम कपड़ा बांधे।

जल—कफ प्रधान प्लेग में अड्सै का क्वाथ, पानी की जगह पिलावे।

बेहोशी—प्लेग का ज्वर आते ही रोगी बेहोश हो जाता है। दो चार आवाजें सुन कर कहीं आंखें खोलता है। इसलिये ज्वर नाशक प्रयोगों के साथ ऐसे उपचार भी करे जिससे रोगी होश में आवे। रोगी के शिर के बाल यदि बड़े हों तो उन्हें कटवादे और निम्न लिखित औषधियों की मालिश या नस्य देवे।

बादाम की मिंगी, केशर, काफूर, और मिश्री इनको पानी में
तो० १ माशे १ मा० १ मा० २
पीस कर घी ५ तोले मिला कर मन्द २ अग्नि से पकावे जब घृत